आन्तरिक शक्तियों को बढ़ाने के लिए आध्यात्मिकता जरूरी-दादी रतनमोहिनी

शान्तिवन। आज के परिवेश में परिस्थितियों को बदलने तथा अपराध रहित समाज बनाने के लिए आन्तरिक शक्तियों की आवश्यकता है। जब तक हम आध्यात्मिकता को अपने जीवन का अंग नहीं बनायेंगे तब तक आन्तरिक शक्तियों का विकास सम्भव नहीं है। उक्त उदगार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये। वे शान्तिवन में 'मूल्यनिष्ठ जीवन प्रशिक्षण' शिविर में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों पर रहने वाली कुमारियों के ट्रेनिंग कार्यक्रम में देशभर से आयी बहनों को सम्बोधित कर रही थी।

आगे उन्होंने कहा कि हमारा जीवन दूसरों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत होना चाहिए। आज समाज में लागों की उम्मीद युवाओं से भी उठने लगी है। ऐसे में युचाओं को आगे आकर मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर मिशाल बनने की आवश्यकता है। दिन प्रतिदिन समाज का वातावरण बदलता जा रहा है। आसुरी शक्तियां मुखर होती जा रही है। ऐसे वक्त में दैवी गुणों को धारण कर आसुरी शक्तियों को इस संसार से मिटाने में सहयोगी बनने की आवश्यकता है। राजयोग की शक्ति मनुष्य को आन्तरिक शक्ति बढ़ाने में वरदान साबित होती है। इसलिए हर एक मनुष्य इससे अपनाने की आवश्यकता है।

ब्रह्माकुमारीज संस्था के महासचिव ब्र. कु. निर्वेर ने कहा कि मनुष्य को आध्यात्मिक शक्ति उसके श्रेष्ठ कर्मों से बनती है और बुरे कर्मों से बिगड़ती है। यह सभी जानते हैं कि बुरे कर्मों से आत्मा की शक्ति मरती है। जिससे व्यक्ति समाज में श्रेष्ठ प्राणी होते हुए भी बुरा कर्म करता है। आज समाज में मनुष्य का ऐसा कर्म कर रहा है कि जिससे मनुष्य के श्रेष्ठता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है। इसलिए युवाओं को आगे आकर मूल्यनिष्ठ समाज बनाने में मददगा बनना चाहिए। दिल्ली से आयी प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र. कु. आशा ने कहा कि हमारा नाम अच्छे समाज के निर्माण में लगना चाहिए। आज युवाओं को अपनी शक्ति पहिचान कर एक श्रेष्ठ समाज बनाने में लगाना चाहिए। इस मौके पर ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र. कु. सरला, युवा प्रभाग की वरिष्ठ सदस्या ब्र. कु. जागृति ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन चंडीगढ़ से आयी ब्र. कु. अनिता ने किया।